नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया
भाग - 1

लेखिका - चपला देवी

मुरारीलाल शर्मा

लेखिका के बारे में

द्विवेदी युग की लेखिका चपला देवी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में जानकारी उपलब्ध नहीं हो पाई। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पुरुष लेखकों के साथ-साथ अनेक महिलाओं ने भी अपने-अपने लेखन से आज़ादी के आंदोलन को गति दी। उनमें से एक लेखिका चपला देवी भी रही हैं। कई बार अनेक रचनाकार इतिहास में दर्ज होने से रह जाते हैं। साहित्य समाज में चपला देवी भी ऐसी ही गुमनाम लेखिका हैं।

विषय का आधार

यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि सन् 1857 की क्रांति के विद्रोही नेता धुंधूपंत नाना साहब की पुत्री बालिका मैना आज़ादी की नन्हीं सिपाही थी जिसे अंग्रेज़ों ने जलाकर मार डाला। बालिका मैना के बलिदान की कहानी को चपला देवी ने इस गद्य रचना में प्रस्तुत किया है। यह गद्य रचना जिस शैली में लिखी गई है, उसे रिपोर्ताज का प्रारंभिक रूप कह सकते हैं।

पाठ का उद्देश्य

मातृभूमि की स्वतंत्रता और उसकी रक्षा के लिए जिन्होंने अपने प्राण न्योछावर कर दिए उनके जीवन का उत्कर्ष हमारे लिए गौरव और सम्मान की बात है। उस गौरवशाली किन्तु विस्मृत परंपरा से किशोर पीढ़ी को परिचित कराने के उद्देश्य से इस रचना को **हिन्दू पंच** के बलिदान अंक से लिया गया है।

मुख्य पात्र

1. नाना साहब की पुत्री मैना
2. सर टामस ‘हे’
3. जनरल अउटरम

प्रथम अन्विति

सन् 1857 के संग्राम के विद्रोही नेता धुंधूपंत नाना साहब----- (पृष्ठ 51)---------

------------------------------- मैं तुम्हारी रक्षा का प्रयत्न करूँगा। (पृष्ठ 52)

शब्द	**अर्थ**
विद्रोही	विरोध करने वाला
दमन	दबाना
क्रूरता	कठोरता
निरीह	बेचारा
निरपराध	जिसका कोई अपराध न हो
रोमांचकारी	रोएँ खड़े करने वाला
भीषण	भयंकर
अल्पवयस	छोटी उम्र
वास स्थान	रहने की जगह
सहचरी	साथिन, सहेली

ऐतिहासिक घटना

सन् 1857 के संग्राम के विद्रोही नेता धुंधूपंत नाना साहब बिठूर के रहने वाले थे। उन्होंने सन् 1857 में अपने साथियों के साथ कानपुर में अंग्रेज़ों पर हमला किया था, जिसमें बहुत से अंग्रेज़ नर-नारी मारे गए थे। नाना साहब के विद्रोह का दमन करने के बाद अंग्रेज़ नाना साहब को बंदी बनाने के लिए उनके पीछे पड़ गए और बिठूर पहुँच गए। कानपुर में असफल होने के बाद नाना साहब भागने लगे और जल्दी में अपनी पुत्री मैना को साथ न ले जा सके। देवी मैना बिठूर में पिता के महल में रहती थी। अंग्रेज़ों ने बड़ी ही क्रूरता से उस निरीह और निरपराध देवी मैना को अग्नि में भस्म कर दिया था।

बिठूर में राजमहल में लूट

अंग्रेज़ सेनापति सर टामस 'हे' के नेतृत्व में अंग्रेज़ों का सैनिक दल बिठूर पहुँचा और धुंधूपंत नाना साहब के राजमहल को लूट लिया। लूटने के बाद उन्होंने महल को भस्म करने के लिए तोपें लगाईं।

मैना की अंग्रेज सेनापति सर टामस ‘हे’ से प्रार्थना

अंग्रेज़ सैनिकों ने जब नाना साहब के राजमहल को गिराने के लिए तोपें लगाईं तो नाना साहब की पुत्री मैना महल के बरामदे में खड़ी हो गई। उसने सेनापति से प्रार्थना की कि वे महल को न तोड़ें। जब सेनापति ने कहा कि नाना साहब के महल को गिराने के लिए अंग्रेज़ सरकार का आदेश है। महल को बचाने के लिए मैना ने कहा कि अपराध करने वाले दोषी हैं। इस महल का तो कोई दोष भी नहीं है। मैना ने कहा- मैं इस महल में रहती हूँ, यह मुझे प्रिय है। फिर उसने सेनापति से कहा कि आप जनरल ‘हे’ हैं, मैंने आपको पहचान लिया। आपकी पुत्री ‘मेरी’ और मैं सहेली थीं। जब मेरी हमारे यहाँ आती थी, तब आप भी आते थे। मेरी की मृत्यु से मैं बहुत दुखी हुई। उसकी एक चिट्ठी मेरे पास अब तक है। सेनापति ‘हे’ ने मैना को पहचान लिया और दया दिखाते हुए बोले- मैं तुम्हारी रक्षा का प्रयत्न करूँगा।

प्रश्न

प्रश्न 1. मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती थी, पर अंग्रेज़ उसे नष्ट करना चाहते थे- क्यों?

उत्तर- मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती थी क्योंकि वह उसके पिता का महल था। वहीं उसका बचपन बीता था। मैना वहाँ रहती थी। उसके परिवार की मधुर स्मृतियाँ उसमें समाहित थीं। पर अंग्रेज़ उसे नष्ट करना चाहते थे क्योंकि वह महल उनके शत्रु नाना साहब का था और अंग्रेज़ नाना साहब की हर निशानी को मिटा देना चाहते थे।

प्रश्न 2. नाना साहब अपनी पुत्री मैना को साथ क्यों नहीं ले जा सके?

उत्तर- कानपुर में नाना साहब जब असफल हो गए और अंग्रेज़ सैनिक उनके पीछे पड़ गए तो नाना साहब भागने की जल्दी में अपनी पुत्री मैना को अपने साथ नहीं ले जा सके।

धन्यवाद